अमर प्रेम

सिमरन साधवानी

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Simran Sadhwani 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69726-82-5

Cover Design: Ajay Dhyani
Typesetting: Sagar

First Edition: October 2026

आभार

इस कविता संग्रह को पाठकों के समक्ष एक जीवंत रूप में प्रस्तुत करते हुए मेरा हृदय अत्यंत कृतज्ञता और संतोष से भरा हुआ है। किसी भी पुस्तक की रचना केवल एक व्यक्ति के विचारों का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह उन सभी लोगों के सामूहिक सहयोग, अटूट विश्वास और निरंतर प्रेरणा की परिणति होती है जो इस यात्रा में मार्गदर्शक और सहयात्री बनकर साथ चलते हैं।

सबसे पहले, मैं उस परमपिता परमेश्वर के प्रति कोटि-कोटि आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मुझे इन भावनाओं को शब्दों में पिरोने की क्षमता, संवेदनशीलता और शक्ति प्रदान की।

मैं अपने पूजनीय माता-पिता और परिवार के प्रति दिल से गहरा आभार व्यक्त करती हूँ। उनके असीम स्नेह, धैर्य और मेरे प्रति अटूट विश्वास ने मुझे हर पल संबल दिया। इस पुस्तक की कविताओं में समाहित 'बाबुल' के प्रति जो सम्मान और 'मेरा भाई' के प्रति जो अनमोल स्नेह झलकता है, वह मेरे जीवन के इन्हीं पारिवारिक स्तंभों और सुंदर संस्कारों की ही एक सहज अभिव्यक्ति है। उनके निरंतर प्रोत्साहन के बिना

मेरी कल्पनाओं की इन उड़ानों को कागज़ पर उतार पाना कभी संभव नहीं हो पाता।

इसके साथ ही, मैं अपने उन सभी मित्रों, शुभचिंतकों और पाठकों का सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मेरे लेखन को सराहा और मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। 'अकेली रात', 'अमर प्रेम', 'मेरी तमन्नाएँ' और 'मिलन', 'जीवन – एक संघर्ष' जैसी रचनाओं को जब भी उन्होंने सुना या पढ़ा, उनके द्वारा मिले सकारात्मक सुझावों और स्नेह ने मेरे भीतर के रचनाकार को नया उत्साह दिया।

मैं प्रकाशक महोदय और उनकी पूरी टीम को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के संपादन, मुद्रण और प्रकाशन कार्य को इतनी लगन और व्यावसायिकता के साथ पूर्ण किया ताकि यह पाठकों तक इतनी आकर्षक सजधज के साथ पहुँच सके।

अंत में, मैं उन सभी सुधी पाठकों के प्रति अग्रिम आभार व्यक्त करती हूँ, जो इस पुस्तक के माध्यम से इन भावनाओं और 'पैगाम' को महसूस करेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि इन कविताओं का हर एक शब्द आपके दिल की गहराई को छुएगा और आपके जीवन के किसी न किसी मोड़ की यादों को ज़रूर ताज़ा करेगा। आप सभी का यह स्नेह और जुड़ाव ही

मेरी इस साहित्यिक यात्रा की सबसे बड़ी पूंजी और उपलब्धि है।

सप्रेम धन्यवाद,

सिमरन साधवानी

अनुक्रमणिका

1. अकेली रात 1

2. अमर प्रेम 5

3. मेरी तमन्नाएँ 8

4. बाबुल.....10

5. मेरा भाई 12

6. मिलन..... 14

7. पैगाम 16

8. तेरे पास 18

9. जीवन - एक संघर्ष 20

1.
अकेली रात

ऐसी अकेली रात में,
कोई नहीं है मेरे साथ में।
चाहूँ हो साथ कोई अपना,
हर रात जो लेकर आए सपना।

देखूँ उसकी निगाहों से,
नजारा आकाश चाँद और तारों का,
और कह दूँ हाल अपने दिल का।

हर वक्त है वो मेरे साथ में,
देखा नहीं कभी निगाहों ने ,
महसूस किया है दिल ने,
मैं हसूँ तो वो भी है हँसता,
हर वक्त है मुझको तकता।

बस कहा नहीं है ओठों ने,
बस देखा नहीं है आँखों ने,
और सुना नहीं है कानों ने,
पर अपना बना लिया दिल ने।

मुझे लगा वो मेरे करीब है,
साँसों से साँसें मिलती हैं,
धरती घूमना रुक जाती है,
लहरें यहीं ठहर जाती हैं,
पर पलकें खुल के बताती हैं,
कि
ऐसी अकेली रात में ,
कोई नहीं है मेरे साथ में।

चाहूँ भूल जाना बातों में,
पर दिल न माने रातों में,
कैसे कहूँ मैं सखियों से,
खिल्ली उड़ाए बतियों में।

कहाँ हो तुम आ जाओ,
ले जाके मुझे दिखलाओ,
सदा रहूँगी बनके तुम्हारी,
बस जाऊँगी आँखों में तुम्हारी।

तुम ही हो सपना ,
तुम ही हो सच,
तुम ही नहीं तो,
कुछ भी नहीं बस।

बिन देखे तुम्हें चाहूँ इतना,
देखूँगी तो जी न पाऊँगी,
क्या तुम भी मुझे चाहो इतना,
'न' कहोगे तो मर जाऊँगी।

तुम हो इक हीरा ,
मैं हूँ सोना,
बनके रहेंगे,
जैसे इक गहना।

— सपनों की दुनिया में,
एक स्वप्न परी,
सपनों के राजा को,
देखना चाहती है।।

2.
अमर प्रेम

तुम हमारे दिल पर ,
कुछ इस तरह छाये,
कि आसमां की छाया,
भी कम लग गई।

हमने अपने दिल पर,
तुम्हारी तस्वीर ,
कुछ इस तरह बनाई,
कि तुम्हारे दिल को,
इसकी भनक भी हो न पाई।

तुम्हारी बातें हमारे प्यार में ,
ऐसा रंग भर लाईं,
कि इंद्रधनुष को भी,
शरम-सी आई।

तुम्हारी आँखों की,
झील-सी गहराई,
जिसमें डूब कर,
हममें राहत समाई।

तुम्हारी छवि का सिर्फ़ ,
अहसास भी,
मेरे मन में शीतल हवा ,
का झोंका लाई।

तुम्हारी चाहत मेरे चेहरे पर ,
ऐसा निखार लाई,
जिसे देखकर चाँद को ,
अपनी चाँदनी भी न भायी।

तुम्हारे हर कदम पर ,
साथ ने,
अटल विश्वास की ,
महक फैलाई।

तुम्हारे दिल की हर,
धड़कन ने,
मुझे मेरे नाम की,
गूँज सुनाई।

हमारे अमर प्रेम ने,
हर जनम,
साथ निभाने की ,
कसम है खाई।

हम दो चाहने वालों का,
प्रेम देखकर,
मोर को नाचने की,
उमंग है छाई।

सृष्टि के हर प्रेमी ने ,
हमें देखकर,
यही सीख पाई कि हम ,
दोनों जैसा प्रेमी ,
कोई नहीं भाई!

3.
मेरी तमन्नाएँ

सूनी-सी है दिल की गली,
आकर इसमें तू गुलशन खिला।
शरमाती है मन की कली,
छूकर इसको तू खिलना सिखा।

सावन की बूँदें बनकर कभी,
मेरे कानों में सरगम सुना।

प्रेम का सागर बनकर कभी,
मेरी जन्मों की प्यास बुझा।

सूरज की किरणें बनकर कभी,
मेरे चेहरे को रोशन बना।

सीप के मोती बनकर कभी,
मेरे गले की माला सजा।

हसीन भँवरा बनकर कभी,
इस कमल की कैद में कोई रात बिता।

शीतल चाँद बनकर कभी,
मेरे जीवन के अँधियारे को मिटा।

खोजे तुझे मेरे बाबरे नैन,
न कर मुझे अब और बेचैन।
कहीं बीत न जाए यह जीवन रैन।

आँखें मुँदी, तो पाया मन के अंदर,
मुझ नदी को जैसे मिल गया समंदर,
और थम गया तमन्नाओं का बवंडर।।

4.
बाबुल

परियों-सा मुझको सजाया,
राजकुमारी-सा मुझको बनाया,
हे बाबुल! तेरा शुक्रिया।

सोने का झूला झुलाया,
चाँदी का खिलौना दिलाया,
हे बाबुल! तेरा शुक्रिया।

हर कदम पर मुझको सिखाया,
मन में विश्वास का दीपक जलाया,
हे बाबुल! तेरा शुक्रिया।

मैं थी इक पीतल की गुड़िया,
चमकता हुआ सोना बनाया,
हे बाबुल! तेरा शुक्रिया।

मोतियों जैसा संस्कार पिरोया,
मुझ धागे को माला बनाया,
हे बाबुल! तेरा शुक्रिया।

इतना प्यार तेरे आँगन में पाया,
मुट्ठी खोली तो पूरे जग में समाया,
हे बाबुल! तेरा शुक्रिया।

ईश्वर ने स्वयं जैसा मेरा बाबुल बनाया,
अपनी छवि को उसमें दरशाया,
हे ईश्वर! तेरा शुक्रिया।

5.
मेरा भाई

दुनिया के जिस मोड़ पर,
कामयाबी का सेहरा है।
उस मोड़ का राजा है,
मेरा भाई।

जिसने मेरे दिल की गहराई में,
सबसे पहले जगह पाई।
वो है मेरा भाई।।

जिसने अपनी प्यारी कलाई पर,
मेरी राखी बाँधकर,
मेरी रक्षा की कसम खाई।
वो है मेरा भाई।।

जिसने अपनी पलकों पर बिठाकर,
मुझे सारी दुनिया की
सैर कराई।
वो है मेरा भाई।।

आँखों से दूर होकर भी,
जिसने हरदम अपनी तस्वीर,
मेरे सामने लाई।
वो है मेरा भाई।।

रक्षाबंधन के तोहफे में,
जिसने मेरी और मेरे प्यार की,
तस्वीर बनाई।
वो है मेरा भाई।।

लाख शुकराना उस भगवान का,
जिसने मुझे दिया,
लाखों - करोड़ों में
एक मेरा भाई।

—रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर
—-एक बहन का तोहफा

6.
मिलन

तुम ऊँचे शिखर, मैं बर्फ बन बरसूँ,
बूँद-बूँद गई बिखर, तुम्हें घेरने को तरसूँ।
शीतल बर्फीली चादर, मैं तुम पर ओढ़ दूँ,
नज़ारे जाएँ निखर, जब तुमसे मिलन कर लूँ।।

तुम धूप सुनहरी, मैं कमल बना खिलूँ,
हुई किरणें जब गहरी, मैं मुस्कुरा के महकूँ।
तुम भोर बने रुहानी, मैं ओस पहन चमकूँ,
आ जाए बहार सुहानी, जब तुमसे मिलन कर लूँ।।

तुम आकाश नीले, मैं जमीं बन घूमूँ,
तू बरखा प्रेम की करले, मैं झूमकर भीगूँ।
तू बाहें फैलाकर पुकारे, मैं क्षितिज पर मिलूँ,
सूरज चाँद भी रोशनी लाए, जब तुमसे मिलन कर लूँ।

तुम पेड़ की हरियाली, मैं पुरवा बन झूमूँ,
पत्तों ने सरसराहट कर ली, जब सर्द स्पर्श दे दूँ।
तुमने जब भी साँस ली, तेरी रूह मैं समा लूँ,
जग में छा जाए खुशहाली, जब तुमसे मिलन कर लूँ।

तुम हो पृथ्वी, मैं तुझमें समाया सोना हूँ,
तुम हो सृष्टि, मैं सूरज-सा चमकता गहना हूँ।
तुम हो किस्मत मेरी, मैं अर्धांगिनी तुम्हारी हूँ,
तुम हो जान मेरी, मैं रूह तुम्हारी हूँ।।

7.
पैगाम

आपका पैगाम मिल गया मुझको,
मुस्कुराने लगी मेरी शामें।

मेरे होठों पे गीत आ गए,
गा उठी मैं खुशी से आपकी कसम।

कोई मेरी निगाहों से देखे ज़रा,
बिन पिए मुझ पे छाने लगा है नशा।

डगमगाने लगे अब तो मेरे कदम,
देख सफेद पैगाम आपके हाथ का।

प्यार की खुशबुओं से महकता हुआ,
सिर पे रखूँ इसे या दूँ दिल में जगह,
मिल गई मुझको जन्नत खुदा की कसम।

मेरे मासूम मन का कमल खिल उठा,
आपसे मिलने का मुझको मज़ा मिल गया
खत शुरू करते यूँ लगा मुझे
मैंने समझा कि आप रूबरू हो सनम।

8.
तेरे पास

कदम पे कदम बढ़ा रही हूँ,
भरती जा रही हूँ हर उड़ान।
मगर मेरी नजर तो
तुझ पर ही रह गई।

छू रही हूँ गगन को,
कामयाबी के ऊँचे शिखर को।
मगर मेरा उड़ता आँचल तो,
तेरे हाथ में ही रह गया।

ये शरीर बोलता है, गाता है,
ये अंग नाचते हैं, लिखते हैं।
मगर मेरी रूह तो,
तेरे पास ही रह गई।

मैं गुजर रही हूँ हर मौसम से,
हर फर्ज के बवंडर से।
मगर मुझे महफ़ूज़ रखने वाली चुनर तो,
तेरे पास ही रह गई।

मैं कली से बन गई हूँ फूल,
रंग हो गए हैं और गहरे ज़रूर।
मगर इस कँवल की खुशबू तो,
तेरे पास ही रह गई।

मुझे अरमान पूरे करना तुमने सिखाया,
उनके लिए उड़ान भरना भी तुमने सिखाया।
पर आसमाँ तक पहुँचने की खुशी तो,
तेरे पास ही रह गई।

अब इच्छा बस इतनी है बाकी,
कि आखिरी सांस लूँ जब भी,
मेरी आँखों में हो तेरी छवि,
और मेरी सांसें तेरे पास ही रह जाएं।

9.
जीवन - एक संघर्ष

जीवन चाहे एक मेला हो,
यहां अकेले ही चलना है।

अपने तो मिलेंगे कई,
पर कठिन तो उन्हें पहचानना है।

जीवन की भट्टी में जलकर,
कसौटी पर सुनहरा रंग दिखाना है।

कल से शिक्षा लेकर,
आज में कदम बढ़ाना है।

ऊंचाई के शिखर पर पहुंचकर,
सूरज की किरणों से तपना है।

फर्ज के कांटों से छलनी होकर,
आशीर्वादों की सुगंध को लेना है।

समुंदर में होंगी नाव कई,
पर उसे पार तो तैरकर ही करना है।

कठिनाइयों के सिलबट्टे पर पिसकर,
मीठा रस सफलता का पाना है।

जीवन है एक संघर्ष,
इसे अकेले ही जीतना है।